साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन

बृहस्पतिवार, 27 फ़रवरी 2020

संवत्सर व्याख्यान : *अर्थशास्त्र* की चिरस्थायी विरासत

साहित्य अकादेमी का प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं प्रख्यात विचारक प्रणव मुखर्जी द्वारा दिया जाना था, किंतु अपरिहार्य कारणों से वे नहीं आ पाए। उनका लिखित व्याख्यान साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक संयुक्ता दासगुप्ता द्वारा पढ़ा गया। संवत्सर व्याख्यान का विषय था—अर्थशास्त्र की चिरस्थायी विरासत।

प्रस्तुत है पठित व्याख्यान के कुछ अंशों का हिंदी अनुवाद –

"...'अर्थ' शब्द के विभिन्न आशय हैं, किंतु कौटिल्य ने जिस प्रकार से 'अर्थशास्त्र' के शाब्दिक अर्थ का प्रयोग किया है, वह मानव अस्तित्व के लक्ष्यों के हित में है। इसलिए अर्थशास्त्र धन (अर्थ) की रक्षा और अधिग्रहण का विज्ञान है, संस्कृत का अर्थ है 'योगक्षेम'। इस विज्ञान का उद्देश्य है राजनीति, धन और व्यवहारिकता के अंतर को पूरा करना तथा शक्ति को बनाए रखना। तदनुसार कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रशासन, कानून, न्याय और व्यवस्था, कर, राजस्व और व्यय, विदेश नीति तथा रक्षा और युद्ध जैसे विषय सम्मिलित हैं। इन सभी मामलों का अध्ययन करने का उद्देश्य तीन परस्पर संबंधित अनुमानों यथा - उन कल्याणकारी मुद्दों को बढ़ावा देना, जिनसे धन की प्राप्ति होती है, जिसके बदले में विजय द्वारा किसी के क्षेत्र में

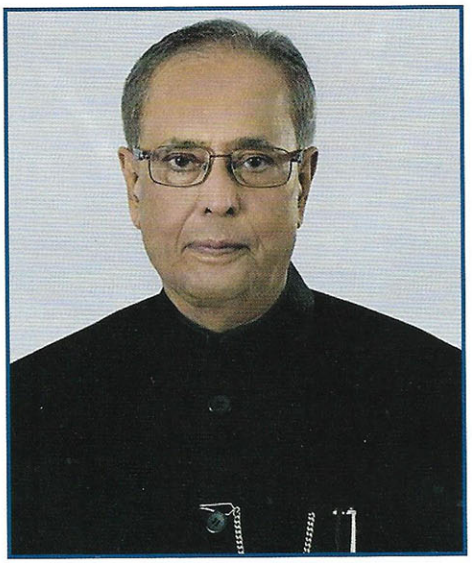

विस्तार करना संभव बनाता है। कौटिल्य का दावा है कि यह प्राचीनकाल से उनके पूर्व के ज्ञान का संकलन है, जो अंतरराज्यीय और अंतरराज्यीयक्षेत्रों के परिप्रेक्ष्य में शासकों के आचरण (व्यक्तिगत और सार्वजनिक) के संबंध में पारंपरिक अवधारणाओं और समझ का संपुंजन है। कुछ मुद्दों पर कौटिल्य के व्यक्तिगत मत भी उनकी टिप्पणियों के रूप में मौजूद हैं, जिसमें वह पहले के विद्वानों की कुछ राय से स्पष्ट रूप से सहमत या असहमत हैं। इसे 1904 में मैसूर के डॉ. आर. शामशास्त्री द्वारा पुनर्जीवित किया गया तथा इसे 1909 में प्रकाशित किया गया तथा 1915 में इसका अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ। अर्थशास्त्र ने अपने उस उद्देश्य को पूर्ण किया जो एक महान पुस्तक के लिए आवश्यक मानदंड था। यह पुस्तक बार-बार पढ़ी जाती है।..."

"...साहित्य समाज का दर्पण है। अर्थशास्त्र के महान ज्ञान द्वारा राज्य और समाज के बीच के अपरिहार्य संबंध का साक्ष्य हम प्राप्त कर सकते हैं। समाज और इसके लोगों की प्रसन्नता तथा भलाई इसका उच्च मानदंड है। प्रसन्नता मानव जीवन अनुभव का आधार है। स्वास्थ्य, प्रसन्नता और उर्वर जीवन हमारे नागरिकों के मूल अधिकार हैं।"

"...कौटिल्य का श्लोक, जो संसद भवन के लिफ्ट नं. 6 के पास अंकित है, अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता और स्थायी भाव को बहुत सुंदर तरीके से दर्शाता है–

प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां तु हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्॥

अर्थ : प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है, प्रजा के हित में ही उसे अपना हित दिखना चाहिए। जो स्वयं को प्रिय लगे उसमें राजा का हित नहीं है, उसका हित तो प्रजा को जो प्रिय लगे उसमें है।..."

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित इस संवत्सर व्याख्यान का विमोचन भी किया गया।

आज के कार्यक्रम

आमने-सामने : कुछ पुरस्कृत लेखकों के साथ संवाद
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी)
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे

अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.00 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति
रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

नाट्य लेखन के वर्तमान परिदृश्य पर परिचर्चा आयोजित

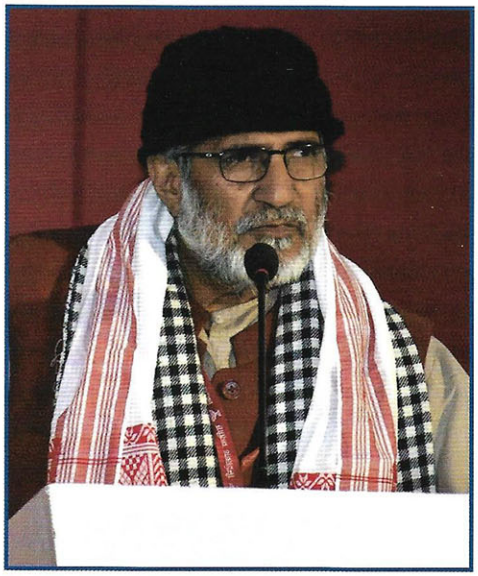

"नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य" पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात लेखक और वर्तमान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने किया। उन्होंने भारतीय नाट्य परंपरा का ज़िक्र करते हुए कहा कि किसी भी परंपरा का अनुसरण करना किसी बोझ को ढोना नहीं है, बल्कि कोई परंपरा अपने आपको वर्तमान में ढालने के लिए हमेशा सजग रहती है। आगे उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन बेहद सूक्ष्म होता है, लेकिन यह परंपरा को हमेशा आधुनिक बनाए रखता है। उन्होंने नए निर्देशकों द्वारा नाट्य आलेखों में मनमाने बदलाव करने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्रक्रिया भारतीय नाट्य परंपरा को अवरुद्ध करने वाली है। उन्होंने नाट्य निर्देशकों से अपील की कि 'शब्द' नाटक का शरीर होते हैं, अतः उनका सम्मान करना ज़रूरी है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि विभिन्न विधाओं के रंगकर्म उनके हृदय के अत्यंत निकट हैं। कोई भी रचना जब नए परिवेश के साथ दर्शकों के सामने प्रस्तुति होती है तो वह भी नई होकर वर्तमान का हिस्सा हो जाती है। उन्होंने अपने कई नाटकों में किए गए इस तरह के परिवर्तनों की जानकारी भी दी।

परिचर्चा के अगले सत्र में कृष्णा मनवल्ली की अध्यक्षता में अथोकपम खोलचंद्र सिंह (मणिपुरी), सपनज्योति ठाकुर (असमिया), शफ़ाअत खान (मराठी) और सुमन कुमार (हिंदी) ने नाट्य लेखन के वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार रखे। शफ़ाअत ख़ान ने कहा कि मराठी में नाट्य लेखन की एक स्वस्थ परंपरा है, जो आज तक चली आ रही है। सपनज्योति ठाकुर ने असमिया के व्यावसायिक थियेटर का ज़िक्र करते हुए कहा कि हालाँकि यह केवल मनोरंजन के लिए होता है, लेकिन फिर भी इस कारण, हमेशा नए नाटक उपलब्ध रहते हैं। सुमन कुमार ने कहा कि वे एक नाट्य निर्देशक के रूप में नाट्य लेख में बदलाव को ग़लत नहीं मानते, बल्कि नाट्य लेखकों को अगर यह बदलाव ठीक लगे तो उन्हें इसके लिए निर्देशकों को छूट देनी चाहिए, वैसे भी नाटक मुक्ति का यज्ञ होता है तो उसके लिए किसी भी तरह का कोई अवरोध नहीं होना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में सभी के प्रति धन्यवाद देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी नाटकों के अनुवाद एवं नाट्य पाठ के लिए प्रयास कर रही है। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

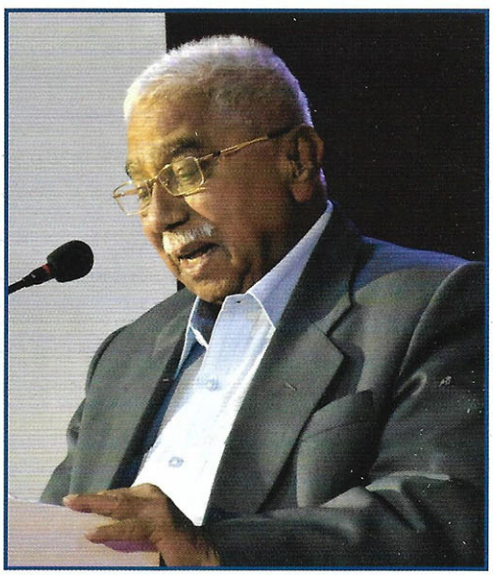

लेखक सम्मिलन-पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए अपने रचनात्मक अनुभव

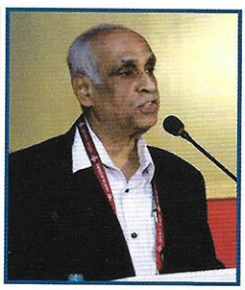
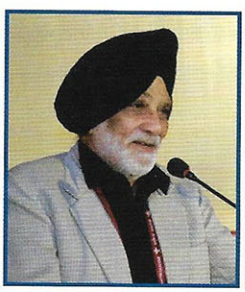
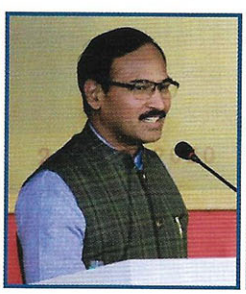
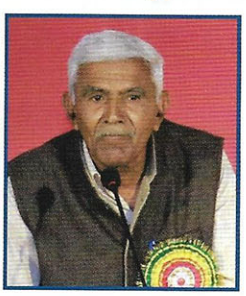

साहित्योत्सव के तीसरे दिन आज लेखक-सम्मिलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। असमिया लेखिका जयश्री गोस्वामी महंत ने अपने पुरस्कृत उपन्यास चाणक्य की रचना प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि चाणक्य पर उपलब्ध विभिन्न पुस्तकों से मैंने उनके बारे में प्रचलित भ्रांतियों को अलग करते हुए एक शोधपूर्ण उपन्यास लिखने का मन बनाया, जिसमें उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में तथ्यात्मक और सटीक जानकारी देने की कोशिश की है। लेकिन मैं फिर भी पाठकों से कहना चाहूँगी कि वे इसे उपन्यास के रूप में ही पढ़ें न किसी इतिहास की पुस्तक की तरह।

पुरस्कृत गुजराती लेखक रतिलाल बोरीसागर ने अपने वक्तव्य में कहा कि सर्जक की आंतरिक शुद्धि उसकी चेतना को विशेष रूप से सचेत करती है। मेरी अधिकांश हास्य रचनाओं की कंटेंट मेरे निजी अनुभवों पर आधारित होती है। कभी जब कोई ऐसा अनुभव होता है, उसी वक्त उस अनुभव पर हास्यनिबंध लिखने का विचार आ जाता है।

हिंदी के पुरस्कृत कवि नंदकिशोर आचार्य ने इस अवसर पर विशेष रूप से हिंदी के कालजयी रचनाकार अज्ञेय का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए कहा कि साहित्य और विशेषतः कविता का संबंध समय या परिवेश से विश्लेषणात्मक नहीं बल्कि संवेदनात्मक रिश्ते के अनुभूत्यात्मक अन्वेषण का है। इस रिश्ते के नए और बदलते आयामों का उद्घाटन ही कविता का धर्म है और यह अन्वेषण ही हमारी शब्द-चेतना के नए आयामों का सृजन संभव करता है - जो प्रकारांतर से मानव-चेतना के नए आयामों का सृजन है।

मैथिली में पुरस्कृत कुमार मनीष अरविंद ने कहा, एक वनाधिकारी के रूप में प्राप्त हुए ज्ञान और अनुभव ने मेरे इस विश्वास को लगातार दृढ़ किया कि प्रकृति-संरक्षण का मुद्दा मानवता के वास्ते अहम है। सो यह विषय मेरी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान पाता रहा है।

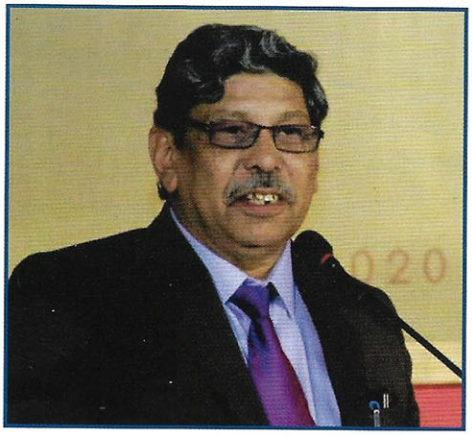

मराठी में पुरस्कृत अनुराधा पाटील ने कहा, मुझे लगता है कि कविता जीने की प्रक्रिया में जीने को सहज बनाने वाली, भीतर-बाहर के सभी उलझनों को एक हद तक सुलझानेवाली मूल्यवान बात है। इंसान और इंसानियत पर भरोसा करना, करुणा की दिशा में दो कदम आगे बढ़ाना, मेरे लिए कविता की ही देन है और यह एक निरंतर खोज यात्रा है।

राजस्थानी में पुरस्कृत रामस्वरूप किसान ने कहा, मैं साहित्यकार से पहले एक किसान हूँ। मेरे नाम के साथ किसान इन्वर्टेड कॉमा में नहीं है। 40 सालों से हल और कलम मेरे साथ-साथ चल रहे हैं। मेरे यहाँ श्रम एवं सृजन एकमेक हैं। मेरा पूरा लेखन पसीने के बल से निकला है। इस अर्थ में खुद को गोर्की का वारिस मानता हूँ। मैं जब उस महान लेखक से अपनी तुलना करता हूँ तो बहुत स्थलों पर मेरे संघर्ष उनके संघर्षों से मिलते हैं और इस मिलान से मुझे ताक़त और संतुष्टि मिलती है।

पंजाबी में पुरस्कृत किरपाल कज़ाक ने बताया, किस प्रकार मेरा यह पुरस्कृत कहानी-संग्रह अंतहीन और पिछली आधीशताब्दी का लेखन, निम्न किसानी, दलित और दमित वर्ग के त्रासदिक जीवन पर केंद्रित रहा।

ओड़िआ में पुरस्कृत तरुणकांति मिश्र ने कहा कि मेरे कहानी-संग्रह *भास्वती* में धुंधली सुबह, अतियथार्थवादी रातें तथा इनके बीच बहुत कुछ निहित है। इसका चित्रफलक बहुत चौड़ा है : जो भारत के पूर्वी जंगलों की अंधेरी रातों से लेकर उत्तरी अमेरिका के एक छोटे से शहर में ढकी शाम तक है।

कन्नड में पुरस्कृत विजया ने बताया कि यह बड़ी विडंबना है कि हिंसा महिलाओं के जीवन का एक हिस्सा बन गई है। महिलाओं के पास कोई सुरक्षा नहीं है और इस तथ्य को कभी गंभीरता से नहीं लिया गया तथा यह एक गंभीर चिंता का विषय है। महिलाओं के खिलाफ अत्याचार को इंगित करने वाले आंकड़े भयावह हैं। महिलाओं के कल्याण के लिए जो कानून बन गए हैं, वे जमीनी स्तर तक नहीं पहुँच पाते हैं और समाज का एक बड़ा हिस्सा उससे महरूम रह जाता है।

मणिपुरी में पुरस्कृत बेरिल थांगा ने कहा कि सभ्य देशों के कई प्रख्यात व्यक्तियों की कहानियों में प्रचुर मात्रा में इतिहास देखने को मिलता है। लेकिन उन अज्ञात लोगों ने भी अपने जीवन को स्वयं द्वारा निर्धारित नियमों, नैतिकता, संस्कृति और विश्वासों के आधार पर जीया। मुझे बार-बार संदेह होता है कि क्या उनका स्वयं का भी कोई जीवन था या नहीं।

कश्मीरी में पुरस्कृत अब्दुल अहद हाजिनी ने कहा कि मूलतः कश्मीरी भाषा के लेखक के रूप में मेरी यात्रा वास्तव में महान रही। मेरे चाचा प्रोफ़ेसर मोहि-उद्दीन हाजिनी एक महान विद्वान और लेखक थे जिनकी सक्रियता, शोध अभिवृत्ति तथा विश्व साहित्य पर उनकी महान पकड़ ने उनके समय में

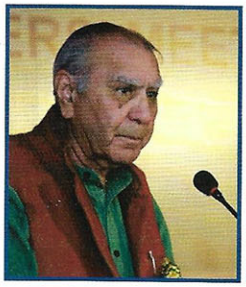

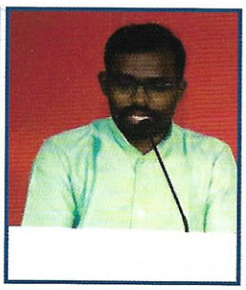
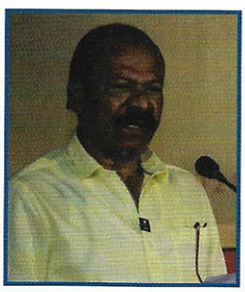

हमारे घर तथा पूरी कश्मीर घाटी को एक नया जीवन प्रदान किया।

मलयाळम् में पुरस्कृत वि. मधुसूदनन् नायर ने कहा कि मेरे काव्य स्वप्नों में मैं प्रत्येक आत्मा में प्रेम और शांति के सोए हुए देवत्व के जागरण के लिए प्रार्थना करता हूँ। पुरस्कृत पुस्तक *अच्छन पिरन्न वीदु* चौदह कविताओं का संग्रह है, जिनका एक दूसरे से सटीक संबंध है।

कोंकणी में पुरस्कृत निलबा अ. खांडेकर ने कहा कि कविता मेरा पहला प्यार है। यह वह स्थान है जहाँ मुझे शांति मिलती है। यह वह जगह है जहाँ मैं अपने ''अन्य स्व'' से बात कर सकता हूँ। यह वह स्थान है, जब जिस दुनिया को हम अपना घर कहते हैं बंद हो जाता है, यह स्थान मुझे अपने घर से भी अधिक अपना-सा लगता है। यह वह स्थान है जहाँ मैं रह सकता हूँ और नेतृत्व कर सकता हूँ जब अन्य मुझे अकेला छोड़ देते हैं।

उर्दू के लिए पुरस्कृत शाफ़े किदवई ने अपने वक्तव्य में कहा कि अपने लेखन की शुरूआत उन्होंने एक आलोचक के रूप में की थी और पहली रचना 1978 में नया दौर में प्रकशित हुई थी। अपनी पुरस्कृत पुस्तक *सावनेह सर सय्यद : एक बाज़दीद* का जिक्र करते हुए कहा कि यह पुस्तक सर सय्यद पुर लिखी गई विभिन्न भाषाओं की आत्मकथाओं का अध्ययन कर उनका विश्लेषण किया गया है। उन्होंने इस पुस्तक में सर सय्यद के बारें में कुछ नई जानकारियाँ भी दी हैं।

सम्मिलन में चिन्मय गुहा (बाङला), फुकन चंद्र बसुमतारी (बोडो), सलोन कार्थक (नेपाली), पेन्ना मधुसुदन (संस्कृत), कालीचरण हेम्ब्रम (संताली), ईश्वर मूरजाणी (सिंधी), चो. धर्मन (तमिऴ) एवं बंडि नारायण स्वामी (तेलुगु) ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन संपन्न

तीन दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का आज अंतिम दिन था। आज के सत्र 'आदिवासी संवेदनाएँ और मिथक' की अध्यक्षता मौली कौशल ने की और जी. कृष्णा, वी. आर. राल्ते एवं विद्या कामत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रचलित मिथकों से जुड़े हुए पहलुओं पर बातचीत की। जी. कृष्णा जो कि लम्बाडी आदिवासी समुदाय से थे ने बंजारा समुदाय में आधुनिक समय में प्रचलित मिथकों की चर्चा की और कहा कि किसी भी देश का सांस्कृतिक प्रभाव आदिवासी भाषाओं की उन्नति का कारण भी बनता है। श्रीमती विद्या कामत ने आदिवासी मिथकों को आधुनिक समय से जोड़ते हुए आदिवासियों की पारिस्थितिकी और धार्मिकता के संबंधों को विवेचित किया।

मिजो लेखक एवं अुनवादक वी.आर. राल्ते ने आदिवासी संवेदना और भारतीय मिथकों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि आदिवासी जनजीवन को जानकर ही हम भारत की जीवन पद्धति को संपूर्णता में जान सकते हैं। उन्होंने वर्तमान समय में मिजो आदिवासी समुदाय द्वारा महसूस की जा रही परेशानियों के बारे में बताया।

सम्मिलन का अगला सत्र कविता-पाठ का था जिसमें जनेश अयन चकमा की अध्यक्षता में एस. ल्हिङनिथिम हावकिप (कुकी), एम. पावमिनलाल हावकिप (थाडौ-कुकी), सत्यजित टोटो (टोटो) एवं हांगमिजि हंसेह (कार्बी) ने अपनी

कविताएँ प्रस्तुत कीं। टोटो समुदाय के सत्यजित टोटो ने अपने समुदाय के कारीगर एवं मजदूर लोगों की व्यथा का चित्रण अपनी कविता में किया। बंगाल के जिस क्षेत्र में वह रहते हैं वहाँ आय का मुख्य साधन फ़ैक्ट्रियों में काम करना है। न चाहते हुए भी इन फ़ैक्ट्रियों में मज़दूरी करना इन सबके लिए गहरी यातना से भरा होता है।

अंतिम सत्र में संपत देवजी ठाणकर की अध्यक्षता में सीता कुमारी केरकेट्टा (कुडुख), गौरीप्रभा सिंह (मुंडारी) एवं कुमुदा बी. (पारदिवाग्री) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

साहित्योत्सव 2020 के कार्यक्रम

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी सभागार
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दास्तानगोई	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी सभागार
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)	रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in